7

आतम अनुभव करना रे भाई

आतम अनुभव करना रे भाई, आतम अनुभव करना रे।।
जब लों भेद ज्ञान नहिं उपजै, जन्म मरण दुख भरना रे ।।
आगम पढ़ि नव तत्त्व बखानै, व्रत तप संयम धरना रे।
आतम ज्ञान बिना नहिं कारज, योनी संकट परना रे ।।
आतम अनुभव करना रे भाई आतम अनुभव करना रे ।।
सकल ग्रंथ दीपक हैं भाई, मिथ्या तम के हरना रे।
कहा करें ते अंध पुरुष को, जिन्हें उपजना मरना रे।।
आतम अनुभव करना रे भाई आतम अनुभव करना रे ।।
'द्यानत' जे भवि सुख चाहत हैं, तिनको यह अनुसरना रे।
सोऽहं, ये दो अक्षर जपकै, भव जल पार उतरना रे ।।
आतम अनुभव करना रे भाई आतम अनुभव करना रे ।।

हे भाई! अपनी आत्मा का अनुभव करना। जब तक भेद ज्ञान उत्पन्न नहीं होगा तब तक जन्म और मरण के कष्टों को सहन करना पड़ेगा॥ टेक॥

शास्त्र अभ्यास करना, नव तत्वों की चर्चा एवं व्रत-नियम संयम व तप धारण करने के बाद भी यदि आत्मज्ञान का कार्य नहीं किया तो हमें संसार के दुखों को सहन करना पड़ेगा, इसलिए अपनी आत्मा का अनुभव करना॥ १॥

जितने भी जैन शास्त्र हैं वे दीपक की तरह हैं और मिथ्यात्व रूपी अंधेरे को दूर करने वाले हैं परंतु जिन्हें शास्त्र अभ्यास नहीं करना है वे अंधे पुरुष की तरह हैं और उन्हें जन्म मरण का कष्ट सहन करना पड़ेगा। अतः हे भाई! अपनी आत्मा का अनुभव करना॥ २॥

कविवर द्यानतराय जी कहते हैं कि जो भव्य जीव सुख की प्राप्ति करना चाहते हैं उनको इन शास्त्रों का अनुसरण करना चाहिए। सोऽहं अर्थात वही मैं हूं - इन दो अक्षरों का ध्यान करके भव संसार से पार उतरना चाहिए। हे भाई! अपनी आत्मा का अनुभव करना॥ ३॥